Dr Kumari Manisha
H.O.D. Economics

Semester IIIrd 18-20

"A Mix of monetary and fiscal policy is needed for Economic stability." Discuss this statement.
(विवेचना करें कि किस प्रकार मुद्रावादी मौद्रिक नीति को अधिक महत्वपूर्ण स्थिरीकरण नीति मानते हैं। वे विभिन्न मौद्रिक नीति के क्यों हिमायती हैं?)

Or

(Keynesian Stabilization policy)

Or

स्थिरीकरण मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति का प्रमुख उद्देश्य है अर्थव्यवस्था का स्थिर विकास अर्थात् स्थिरीकरण नीति का उद्देश्य यह है कि अर्थव्यवस्था में होने वाले उतार चढ़ाव (Fluctuations) को कम किया जाए। इसे निम्न चित्र के द्वारा समझ सकते हैं।

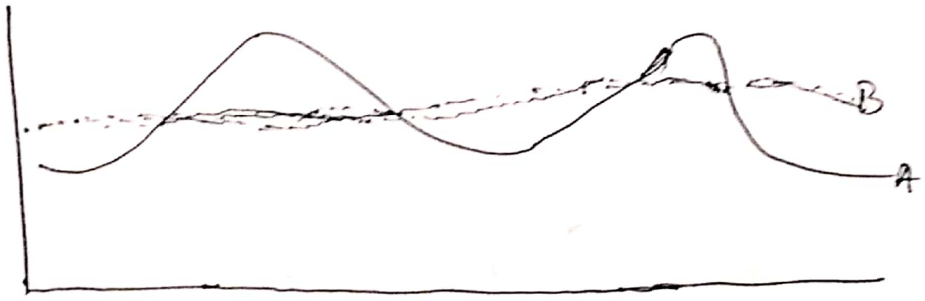




1936 में प्रकाशित केन्स का ग्रन्थ "General Theory of Employment Interest and Money"

उपरोक्त चित्र के अनुसार अर्थव्यवस्था पथ A न होकर B के अनुसार अग्रसर हो। 1930 के दशक में भयानक आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा। परम्परागत सिद्धान्तों का विश्लेषण करने वाले अर्थशास्त्रियों के लिए बौद्धिक विफलता थी इस आर्थिक मंदी की सुसंगत (Coherent) व्याख्या किसी भी अर्थशास्त्री द्वारा प्रस्तुत नहीं हो पायी।

Keynes के General Theory में न केवल घटनाओं की व्याख्या के साथ-साथ बौद्धिक ढाँचा तथा सरकारी हस्तक्षेप के लिए भी स्पष्ट तर्क किए गए। यह Effective Demand पर जोर दिया गया जिसको आज Aggregate Demand कहा जाता है, केन्स का कहना था कि अल्पकाल में प्रभावी माँग ही उत्पत्ति का निर्धारण करती है। बाजार आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था स्वाभाविक रूप से (inherently unstable) अस्थिर है इसलिए स्थिरता लाने के लिए सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

प्रभावी माँग की व्याख्या करते हुए केन्स ने आधुनिक समष्टि

(1) आय के साथ उपभोग का परस्पर सम्बन्ध तथा गुणक.

(2) तरलता अधिमान (यानि मुद्रा की मांग); इसके द्वारा इस बात की व्याख्या प्रस्तुत की गई कि किस प्रकार मौद्रिक नीति ब्याजदर तथा समग्र मांग को प्रभावित करती है।

(3) उपभोग तथा निवेश को प्रभावित करने में आशंका (Expectations) का महत्व. मांग और उत्पत्ति में परिवर्तन आशंकाओं से प्रभावित होता है/ तथा अर्थव्यवस्था

कीन्स ने अपने General theory में इस बात पर बल दिया कि स्थिरीकरण के लिए मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति आवश्यक है। कीन्स की धारणा यह थी कि दीर्घकाल में बाजार संतुलन कायम करता है, लेकिन दीर्घकाल में तो हम सभी मर जायेंगे (In the long run we are all dead) अतः अल्पकाल ही हमारे लिए महत्वपूर्ण है और अल्पकाल में मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के बिना अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाना संभव नहीं है।

स्थिरीकरण उद्देश्यों की प्राप्ति इतना आसान कार्य नहीं है अनेक प्रकार के समय विलम्ब (time lags) इन नीतियों की सफल क्रियाओं को प्रभावित करते हैं। यथा.

(I) अनेक प्रकार के विलम्ब (Various types of lags) - कुछ अर्थशास्त्रियों का कहना है कि सरकार को मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों से अर्थव्यवस्था के स्थिरीकरण का प्रयास नहीं करना चाहिए इन नीतियों का उपयोग तीव्र आर्थिक विकास तथा निर्धनता पर [illegible] जैसे दीर्घकालिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जाना चाहिए अल्पकालिक उद्देश्य, जैसे व्यापार चक्र के उतार चढ़ाव को दूर करने को बाजार पर छोड़ देना चाहिए

(II) पहचान विलम्ब (Recognition lags) → नीति निर्माताओं को तेजी या मंदी की पहचान करने में समय लगता है अनेक आर्थिक आंकड़े, जैसे राष्ट्रीय आय, उत्पत्ति, आदि केवल तिमाही पर ही उपलब्ध होते हैं उदाहरणस्वरूप यदि अर्थव्यवस्था में मंदी की स्थिति फरवरी में होती है तो इस परवर्ती के आंकड़े इकट्ठे करने में [illegible] आंकड़े अप्रैल में उपलब्ध होंगे आंकड़े इकट्ठे करने में समय लगता है इतना ही नहीं राष्ट्रीय तथा उत्पत्ति परवर्ती आंकड़े जो शुरु में इकट्ठे की जाती है वह प्रारंभिक ही होती है जो बाद आंकड़े निकलने अनुसार अधार बदल जाते हैं

अतः प्रारंभिक अनुमानों की व्याख्या अधिक हो जाती है और परिणाम होता है पहचान विलम्ब।

(iii) कार्यान्वयन विलम्ब (Implementation lags) — निर्णयकर्ता नीति की समस्या इस पहचान के बाद भी समाप्त नहीं हो जाती है कि अर्थव्यवस्था मंदी या स्फीति की दशा में है। तेजी या मंदी की पहचान कर लेने के बाद भी सरकारी मौद्रिक और राजकोषीय नीति के क्रियान्वयन में समय लगता है। इसे भी कार्यान्वयन विलम्ब कहा जाता है। लोक व्यय या करारोपण में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है जब तक इसकी अनुमति संसद द्वारा दिया जाता है। इसकी अनुमति प्राप्त करने में समय लगता है।

(iv) प्रतिक्रिया विलम्ब (Response lags) — अर्थात् आर्थिक समस्याओं की पहचान के ये तथा इनके समाधान के लिए आवश्यक नीतियां बनाने के कार्यान्वयन के बाद प्रतिक्रिया में विलम्ब हो सकता है। मौद्रिक तथा राजकोषीय नीति में होने वाले परिवर्तनों के आलोक में अर्थव्यवस्था में प्रतिक्रिया करने में देरी होना।

स्थिरीकरण नीति के आलोचक कहते हैं कि केन्द्रीय बैंक परिवर्तित आर्थिक दशा के अनुकूल नीति में परिवर्तन अत्यधिक देरी से करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसी नीति आर्थिक उतार-चढ़ाव का उपचार (cure) न होकर, कारण (cause) बन जाती है। इसलिए आलोचक निष्क्रिय मौद्रिक नीति (Passive Monetary policy) की सिफारिश करते हैं अर्थात् मुद्रा की पूर्ति में धीमी और स्थिर गति (slow and study) से वृद्धि।

मालूम